अथर्ववेद और चरक संहिता में वर्णित रोगोपचारों का तुलनात्मक अध्ययन

संस्कृत विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

अनीता रानी

शोध निर्देशिका

डॉ० निशीथ गौड़

असिस्टेंट प्रोफेसर

संस्कृत विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा – 282005

2024

अथर्ववेद और चरक संहिता में वर्णित रोगोपचारों का तुलनात्मक अध्ययन

प्राक्कथन

अथर्ववेद आयुर्वेद का आधार है, जिसमें चिकित्सक एवं शरीर के विभिन्न भागों तथा उनके उपचार के बारे में बताया गया है। वनस्पति चिकित्सा पर आधारित यह प्राकृतिक उपचार प्रणाली वेदों के युग में विकसित हुई। चार वेदों में से अथर्ववेद विशेष रुप से इस प्राचीन चिकित्सा से संबंधित है। वैदिक स्रोतों से ही हमें पता चलता है, कि प्राचीन समय में कई चिकित्सक थे और हजारों औषधियाँ थी।

ऋग्वेद में शल्य चिकित्सा द्वारा अंग-प्रत्यारोपण का भी उल्लेख मिलता है। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार वनस्पति मनुष्य के लिए ऑक्सीजन का स्रोत है। औषधियाँ दो प्रकार की होती है। 1. वनस्पति 2. औषधि।

वनस्पति का तात्पर्य पेड़ो से है तथा औषधि का तात्पर्य पौधों से है। अश्विनी कुमारों को बीमारियों को ठीक करने की दिव्यशक्ति वाला बताया गया है। यथा विश्पला की कहानी के अन्तर्गत लंगड़े घोड़े का शल्य चिकित्सा द्वारा इलाज श्रृश्व और कण्व की आँखों की रोशनी और नारद की सुनने की क्षमता वापस आना आदि।

यक्ष्मा, खाँसी, बवासीर, कृमि, कुष्ठ रोग, ज्वर, गठिया, हृदयविकार, पेट के विभिन्न रोगों का इलाज अनेक वनस्पति औषधियों से किया जाता है। जैसे अक्षत, अतसी, अपामार्ग, अर्जुन, अश्वत्थ, तौदी, घृताची, उत्तानपर्णा, गुग्गल, अश्वरथ, अजश्रृंगी, पीलानलदी, प्रमदन्ती महावृक्ष आदि।

पीड़ाहीन प्रसव के लिए अनेक सूक्त रचे गए हैं-

ज्वरनाशनम्

यदग्निरापो अदहत् प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्मधृतो नमांसि।
तत्र त आहुः परमं जनित्रं स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन्।।

अथर्वः 2/5/25/1

यक्ष्मनाशनम्

नमो रुद्राय नमो अस्तु तक्मने नमो राज्ञे वरूणाय त्विषीमते।
नमो दिवे नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः।।

अथर्व : 13/3/21/2,6 काण्ड, पृष्ठ 242

यजुर्वेद में कहा है

"प्रथमो दैव्यो भिषक्"

ऋग्वेद में

"भिषक्तमं त्वां भिषजां श्रृणोमि"।

चरक संहिता

आयुर्वेदीय संहिताओं में 'चरक संहिता सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है, इसमें चिकित्सा विज्ञान के मौलिक तत्त्वों का उत्तम विवेचन किया गया है। प्राचीन विद्वानों ने भी कहा है-

'चरकस्तु चिकित्सिते'

आचार्य चरक के द्वारा चरक संहिता प्रतिसंस्कृत हुई। चरक संहिता के कुछ भागों की रचना आचार्य ' दृढ़वल' के द्वारा की गई।

चरक संहिता की भाषा प्रसादगुणयुक्त है तो भाष्य की भाषा बड़ी क्लिष्ट है।

वाग्भट्ट ने भी तीन दोष माने हैं-

'वायुः पित्तं कफश्चेति, त्रयो दोषाः समासतः' (सूत्रस्थानम् पृष्ठ 33)

चरक में,

'कफे वाते जितप्राये पित्तं शोणितमेव वा।
यदि कुप्यति वातस्य क्रियमाणे चिकित्सते।
यथोल्वणस्य दोषस्य तत्र कार्यं भिषग्जितम्।।'

(चरक संहिता में सूत्रस्थानम् पृष्ठ 33)

इस वचन द्वारा रक्त को भी दोष माना है। आयुर्वेदीय चिकित्सा में वातादि तीन दोषों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसीलिए कहा गया है इनके बिना देह की कल्पना ही नहीं होती।

ये तीनों दोष साम्य अवस्था में शरीर को आरोग्य देते हैं तथा वैषम्य अवस्था में रोगों को उत्पन्न करते हैं।

'रोगस्तु दोषवैषम्यं दोषसाम्यमरोगता'

(अष्टांग हृदयम् सूक्त 1/20)

भारतीय चिकित्सा

आयुर्वेद में केवल पञ्चभौतिक शरीर के रोगों को ही रोग नहीं कहा जाता अपितु शरीर, इन्द्रिय, मन एवं आत्मा को होने वाले दुःखों को भी रोग कहते हैं।

'तद्दुःखसंयोगा व्याधव उच्यन्ते'

(सुश्रुत सूक्त 9/23)

'सुखसंज्ञकमारोग्यं विकारो दुःखमेव च'।

(चरक सूक्त 9/4)

संसार में तीन प्रकार के दुःख हैं- आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक।

आध्यात्मिक दुःख उन्हें कहते हैं जिन्हें प्राणी आत्मा से सम्बंद्ध मानता है। ये दो प्रकार के होते हैं- 1. शारीरिक 2. मानसिक

वात, पित्त, और कफ के दोष के कारण शरीर में उत्पन्न विकार शारीरिक दुःख कहलाते हैं और मन के विकार काम कोध, लोभ, मोह, विपर्यय आदि मन से सम्बधित होने के कारण मानसिक दुःख कहलाते हैं।

आधिभौतिक दुःख उन्हें कहा जाता है, जो मनुष्य पशु, साँप आदि पंच और पंचभौतिक प्राणियों के कारण होते हैं।

आयुर्वेद में इन तीन रोगों की चिकित्सा के लिए तीन विधियाँ अपनाई गई है- दैवव्यपाश्रय, युक्तिव्यपाश्रय तथा सत्त्वावजय।

दैवव्यपाश्रय में तन्त्र, मणिधारण, मंगलकर्मादि द्वारा युक्तिव्यपाश्रय के अन्तर्गत संशोधन तथा संशमन चिकत्सा आती है। संशोधन में शरीर मे बढ़े हुए दोषों को बाहर निकाला जाता है जैसे वमन, विरेचन, वस्ति, आस्थापन एवं अनुवासन, रक्तमोक्षण तथा नस्यकर्म आदि। संशमन में शरीर में बढ़े हुए दोषों को किसी औषधि अथवा द्रव्य रूपी पेय पदार्थ के माध्यम से ठीक किया जाता है।

शोध कार्य का उद्देश्य-

1. आयुर्वेदिक उपचार के प्रति जनसामान्य का ध्यान आकृष्ट करना।

2. शोधकार्य के द्वारा समाज को आयुर्वेद से होने वाले लाभ के प्रति जाग्रत करना।

3. रोगों का गंभीर रूप से विश्लेषण करना और चरक संहिता के नुस्खे द्वारा उपचार खोजने के लिए रोगों की जाँच करना।

4. सामान्य रोगों के उपचार के दृष्टिकाण के संदर्भ में अथर्ववेद और चरक संहिता के बीच तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. आयुर्वेदिक उपचार की वर्तमान में उपादेयता बताना।

शोध दृष्टि-

शोध कार्य प्राथमिक व माध्यमिक स्रोतों पर आधारित है। यह अध्ययन पुस्तकों, पत्रों, लेखों और पत्रिकाओं तक ही सीमित है। अध्ययन में शामिल अवधि प्राचीन युग से लेकर नवीन युग तक की है। एकत्रित डेटा अथर्ववेद, चरक संहिता और आयुर्वेद से संबंधित अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकों और पत्रिकाओं तथा वेब स्रोतो आदि से संबंधित है। आवश्यक डेटा विभिन्न माध्यमिक स्रोतो जैसे ऋग्वेद, वैदिक साहित्य का इतिहास, भारत में चिकित्सा का इतिहास भावप्रकाश, सुश्रुत संहिता, तैत्तिरीय संहिता, आयुर्वेद का इतिहास, अष्टांगहृदयम्, अष्टांग संग्रह, वेदों में चिकित्सा विज्ञान, आरोग्य अंक आदि सम्मिलित है।

शोध प्रविध-

अपने शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए मेरे द्वारा व्याख्यात्मक, आगमन, ऐतिहासिक, तुलनात्मक प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। जिसमें अथर्ववेद और चरक संहिता में वर्णित रोगोपचार का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

शोध से पुर्व अध्ययन-

प्रस्तुत शोध विषय का चयन करने से पूर्व मेरे द्वारा विविध विश्वविद्यालय, शोधगंगा, शोधगंगोत्री व ग्रन्थालयों का अन्वेषण किया गया तथा कई विद्वत जनों से परामर्श लिया गया। मेरे द्वारा चयनित विषय ‘‘अथर्ववेद और चरक संहिता में वर्णित रोगोपचारों का तुलनात्मक अध्ययन’’ पर मेरे संज्ञान में कोई कार्य नहीं हुआ है। अतः मैं विद्वतवर्ग से

इस विषय पर शोधकार्य की अनुमति चाहती हूँ, साथ ही आपके द्वारा मेरा मार्ग प्रशस्त किया जाए, मैं सदैव आपकी आभारी रहूँगी।

पूर्व सम्बन्धित शोध का अध्ययन-

मेरा जो शोध विषय है, उस पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है, जो कि मेरे शोध के नवीन एवं मौलिक होने का परिचायक भी है।

पूर्व सम्बन्धित शोध इस प्रकार हैं-

1. तपेदिक रोग से प्रभावित रोगियों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, छत्तीसगढ़ राज्य का दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में, 5 अगस्त 2019 प्रो० ए.एन शर्मा के निर्देशन में कुमार उमेश द्वारा।
2. मधुमेह अभिलक्षण सजगता और रोग विकरों का एक विशेष अध्ययन भीमराव अंबेडकर, बिहार यूनिवर्सिटी 30 दिसम्बर 2022 प्रो० पूनम शर्मा के निर्देशन में, कु० सोनम द्वारा।
3. क्षयरोग उत्पत्ति, कारक, उपचार एवं निरोध का मनोसामाजिक पक्ष, डॉ०. रामशंकर शुक्ला के निर्देशन में 25 जून 2022, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ आनन्द शंकर मिश्रा द्वारा।
4. बालकों में श्वसन संबंधी रोग बेगुसराय जिला के संदर्भ में 31 जुलाई 2023, डॉ० श्याम चौधरी के निर्देशन में कु. स्मिता द्वारा (ललित नारायण मिथिला यूनि०)
5. कैंसर रोग के योग और काल निर्धारण ज्योतिष्य संदर्भ में 19 अप्रैल 2022, डॉ. अंजना जोशी के निर्देशन में पाठक प्रवीना द्वारा (मेवार यूनिवर्सिटी)
6. गूढ़ रोग से ग्रसित रोगियों का सामाजिक एवं आर्थिक परिशीलन एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण, 5 जनवरी 2023 डॉ०. लक्ष्मण सिहं के निर्देशन में, भारती अजय कुमार द्वारा (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय)

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय- अथर्ववेद और चरक संहिता का संक्षिप्त परिचय एवं प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति।

क) अथर्ववेद का संक्षिप्त परिचय

ख) चरक संहिता का संक्षिप्त परिचय

ग) प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति

द्वितीय अध्याय- आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति ।

क) आयुर्वेदिक चिकित्सा के सिद्धान्त

ख) आधिभौतिक रोगोपचार

ग) आधिदैविक रोगोपचार

घ) आध्यात्मिक रोगोपचार

तृतीय अध्याय- अथर्ववेद और चरक संहिता में चिकित्सा विधान।

क) वनस्पति द्वारा चिकित्सा

ख) मन्त्र द्वारा चिकित्सा

चतुर्थ अध्याय- अथर्ववेद और चरक संहिता में वर्णित रोगोपचारों की तुलना।

क) अथर्ववेद में वर्णित रोग

ख) चरक संहिता में वर्णित रोग

ग) अथर्ववेद और चरक संहिता में वर्णित रोगों का तुलनात्मक अध्ययन

पञ्चम अध्याय- वर्तमान काल में आयुर्वेदिक चिकित्सा की मानवोपयोगी प्रासंगिकता

उपसंहार

ग्रन्थ सूची

मूल ग्रन्थ

1. अथर्ववेद संहिता, चौखम्बा, ओरियन्टालिया, वाराणसी (1977)

2. चरक संहिता चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 1969

सहायक ग्रन्थ

1. ऋग्वेद संहिता (10 मण्डल), मनोज पब्लेकिशन्स, मेन रोड़, बुराड़ी, दिल्ली, 2007

2. डॉ० राकेश जिन्दल, प्राकृतिक आयुर्विज्ञान, आरोग्य सेवा प्रकाशन, पंचवटी उमेश पार्क, मोदी नगर, उ०प्र०

3. डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, अष्टांगहृदयम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2022

4. डॉ० रामचन्द्र वर्मा शास्त्री, मनुस्मृति, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

5. पीटर एम. शार्फ, तैत्तिरीय संहिता, प्रोविडेंस आर आईः द संस्कृत लाइब्रेरी, 2010

6. डॉ० अनन्त राम शर्मा, सुश्रुत संहिता, चौखम्बा, सुरभारती, 2023

7. श्री. भावमिश्र, भावप्रकाश पूर्वखण्ड, श्री लाला शालिग्राम वैश्यकृत हिन्दी टीका सहित एवं पं० कान्ति नारायण मिश्र आयुर्वेद विशारद द्वारा संशोधित बम्बई 2019

8. मोतीलाल जालान, बृहदारण्यक शांकरभाष्य, गीताप्रेस गोरखपुर, चतुर्थ संस्करण, 2021

9. डॉ० विनय, ब्रह्मपुराण, डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा. लि. नई दिल्ली, 2016

10. पं० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम', महाभारत वनपर्व, गोविन्द भवन गीता प्रेस गोरखपुर, 7 वॉ संस्करण 2016

11. वाल्मिकी रामायण, गीताप्रेस गोरखपुर, द्वितीय खण्ड कोड 76

12. नन्दलाल दशोरा, ब्रह्मसूत्र (वेदान्त दर्शन), रनधीर प्रकाशन, 2022

13. स्वामी सत्यपति परिव्राजक, योगदर्शन (व्यासभाष्य) दर्शनयोग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ पत्रालय सागापुर, जि० साबरकांठा, गुजरात, 2021

14. महर्षि वेदव्यास, अग्निपुराण, गीताप्रेस गोरखपुर, गोविन्दभवन, कोलकात्ता, 18वाँ पुर्नमुद्रण कोड 1362,

2016

15. गीताप्रेस गोरखपुर, ब्रह्मवैवर्तपुराण, कोड 631

16. अनन्त श्री विभूषित द्वारका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज, शौनक संहिता

Website-

1. google wikipedia.in
2. google wikicarecr.in
3. Hi.mi wikipedia.org
4. http://hi.wikipedia.org
5. wisdomlib.org/hindusm
6. https://en.wikipedia.org

कोश ग्रन्थ

1- अमरकोशः शब्दकल्पदुम-वाचस्पत्यम् वीलियम आप्टे डिक्शनरी सहितः, सृजन झा, निर्देशनम् प्रो० मदनमोहन झा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, के. जे. सोमैया संस्कृत विद्यापीठम्, मुम्बई

2- हिन्दी-संस्कृत शब्द कोश,

सम्पादक- डॉ० मुकेश शर्मा

निर्माता- सृजन झा

3- संस्कृत हिन्दी शब्द कोश

सम्पादक- प्रो० मदन मोहन झा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्,

के. जे. सोमैया संस्कृत विद्यापीठम्, मुम्बई

निर्माणम्- श्रुति झा